Online at: https://researchtrendsjournal.com ISSN No: 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 3; 2024; Page No. 89-92

Received: 18-02-2024
Accepted: 30-03-2024

भारतीय समाज में महिला सहभागिता में शिक्षा के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययनः ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन

[1]प्रज्ञा बौद्ध और [2]डॉ. मुदिता पोपली

[1]शोधार्थिनी, ग्लोकल स्कूल ऑफ शिक्षा शास्त्र, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]शोध निर्देशक, प्रोफेसर, ग्लोकल स्कूल ऑफ शास्त्र, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: प्रज्ञा बौद्ध

सारांश
भारतीय समाज में महिला सहभागिता और शिक्षा का गहरा संबंध है, और यह रिश्ता समय के साथ अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है। विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति, उनकी आर्थिक, सामाजिक, और राजनीतिक भागीदारी को समझने के लिए शिक्षा का महत्व अत्यधिक है। यह शोध पत्र भारतीय समाज में महिलाओं की सहभागिता में शिक्षा के योगदान का विश्लेषण करता है, जिसमें ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के संदर्भ में उनकी भूमिकाओं की तुलना की गई है। इस अध्ययन के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि कैसे शिक्षा महिलाओं को सशक्त बनाने में मदद करती है और किस प्रकार यह समाज में उनकी भूमिका को और अधिक प्रबल करती है।

मुख्य शब्दः शिक्षा, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, भारतीय समाज

प्रस्तावना

भारतीय समाज में महिला सहभागिता और शिक्षा का ऐतिहासिक दृष्टिकोणः भारतीय समाज में सदियों से महिलाओं की स्थिति एक महत्वपूर्ण मुद्दा रही है। प्राचीन काल में, भारतीय समाज में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने और समाज में योगदान देने का अधिकार था, लेकिन समय के साथ सामाजिक ढांचे में बदलाव आया और महिलाओं की स्थिति कमजोर होती चली गई। मध्यकालीन भारत में महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध लग गया, जिससे उनका सशक्तिकरण बाधित हुआ। ब्रिटिश शासन के दौरान और स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी, और इस दिशा में कई सुधार किए गए।

शिक्षा महिलाओं के सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण साधन रही है। यह न केवल उनके आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ाती है, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक भी बनाती है। आज भारतीय समाज में महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं, चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो या राजनीतिक। यह सब शिक्षा के बढ़ते प्रसार का परिणाम है।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिताः शिक्षा का प्रभाव

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति में बड़ा अंतर देखने को मिलता है, और इसका मुख्य कारण शिक्षा है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के अवसर बेहतर होते हैं, जिससे वहां की महिलाएं अधिक आत्मनिर्भर और सशक्त होती हैं। दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के अवसर सीमित होते हैं, जिससे महिलाओं की भागीदारी कम हो जाती है।

शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा और सहभागिता

शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के व्यापक प्रसार ने महिलाओं को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाया है। यहां की महिलाएं शिक्षा प्राप्त करने के बाद विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि व्यवसाय, राजनीति, समाज सेवा, विज्ञान, और तकनीक में अग्रसर हो रही हैं। शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता न केवल परिवार और समाज तक सीमित है, बल्कि वे अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। कई उदाहरणों में, महिलाएं ऊँचे पदों पर काम कर रही हैं, और वे अपने कार्यक्षेत्र में पुरुषों के बराबर योगदान दे रही हैं। शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता उनके आत्मनिर्भर होने के कारण बढ़ी है, जो शिक्षा के कारण संभव हो पाया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा और सहभागिता

दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत निम्न है। यहां महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर कम मिलते हैं, और इसके कारण उनकी सहभागिता भी सीमित रहती है। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में सरकार और गैर–सरकारी संगठनों के प्रयासों से ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा के प्रति

जागरूकता बढ़ी है। परिणामस्वरूप, कई ग्रामीण महिलाओं ने भी शिक्षा प्राप्त की है और वे कृषि, हस्तशिल्प, कुटीर उद्योगों, और अन्य पारंपरिक व्यवसायों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। फिर भी, शहरी महिलाओं की तुलना में उनकी भागीदारी अभी भी कम है।

शिक्षा का महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण पर प्रभाव

शिक्षा महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का सबसे बड़ा माध्यम है। यह उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करती है और उन्हें समाज में समान अवसर प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षा प्राप्त महिलाएं अधिक आत्मनिर्भर होती हैं और वे अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने में सक्षम होती हैं। इसके अलावा, शिक्षा ने महिलाओं को रोजगार के नए अवसर प्रदान किए हैं, जिससे वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो रही हैं।

सामाजिक सशक्तिकरण

शिक्षा ने महिलाओं को सामाजिक स्तर पर सशक्त बनाया है। शिक्षित महिलाएं समाज में अपनी पहचान बनाने में सफल होती हैं, और वे सामाजिक परिवर्तन की अग्रदूत बन जाती हैं। शिक्षा के कारण महिलाएं घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, बाल विवाह जैसे सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ खड़ी हो रही हैं। इसके अलावा, वे अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति भी अधिक जागरूक होती हैं, जिससे अगली पीढ़ी के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित होता है।

आर्थिक सशक्तिकरण

आर्थिक दृष्टिकोण से भी शिक्षा ने महिलाओं के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। शिक्षा प्राप्त महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर मिलते हैं, जिससे वे अपने परिवार के आर्थिक स्रोतों में योगदान कर सकती हैं। इसके अलावा, कई महिलाएं अपने स्वयं के व्यवसाय शुरू कर रही हैं और उद्यमिता के क्षेत्र में भी अपना नाम बना रही हैं। आर्थिक स्वतंत्रता ने महिलाओं को परिवार और समाज में एक सम्मानजनक स्थान दिलाया है।

राजनीति में महिला सहभागिता और शिक्षा का योगदान

राजनीति में महिलाओं की सहभागिता भी शिक्षा के प्रसार के कारण बढ़ी है। शिक्षित महिलाएं राजनीति में प्रवेश कर रही हैं और समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण निर्णय ले रही हैं। आज भारत में कई महिलाएं राज्य और केंद्र सरकार में मंत्री के पद पर हैं, और वे अपने क्षेत्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसके अलावा, पंचायत स्तर पर भी महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है, और इसका श्रेय शिक्षा को जाता है। शिक्षा प्राप्त महिलाओं ने राजनीति में अपनी पहचान बनाई है, और वे अपने समुदाय की समस्याओं को हल करने में सक्षम हो रही हैं। पंचायतों में 33þ आरक्षण ने महिलाओं को राजनीति में आने के लिए प्रोत्साहित किया है, और वे अपने गांवों के विकास के लिए योजनाएँ बना रही हैं।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा की चुनौतियाँ

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के विभिन्न आयामों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि दोनों ही क्षेत्रों में कुछ चुनौतियाँ हैं। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के अवसर अधिक होते हुए भी, कई गरीब परिवारों की लड़कियां अभी भी शिक्षा से वंचित हैं। आर्थिक स्थिति और सामाजिक कुरीतियाँ उनके शिक्षा के मार्ग में बाधा बनती हैं। दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर निम्न है, और वहां की महिलाएं विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक कारणों से शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती हैं।

शहरी क्षेत्र की चुनौतियाँ

शहरी क्षेत्रों में महिलाओं के लिए शिक्षा के अधिक अवसर होते हैं, फिर भी आर्थिक असमानता, परिवारिक जिम्मेदारियां, और पारिवारिक प्रतिबद्धताएं उनके शिक्षा प्राप्त करने में बाधा डाल सकती हैं। कई बार सामाजिक प्रतिबंधों और रूढ़िवादी मानसिकता के कारण लड़कियों की शिक्षा में रुकावटें आती हैं।

ग्रामीण क्षेत्र की चुनौतियाँ

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए शिक्षा की राह और भी कठिन है। यहां पर शिक्षा का बुनियादी ढांचा कमजोर है, और सामाजिक रूढ़िवादिता, गरीबी, और पारिवारिक दबाव के कारण लड़कियों को अक्सर शिक्षा से वंचित रखा जाता है। इसके अलावा, कई स्थानों पर स्कूलों की कमी और शिक्षकों की अनुपलब्धता भी एक बड़ी समस्या है।

शिक्षा के प्रसार के लिए आवश्यक सुधार

महिलाओं की शिक्षा और सहभागिता में सुधार लाने के लिए सरकार और समाज को कई कदम उठाने होंगे। सबसे पहले, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के बुनियादी ढांचे को मजबूत करना होगा। इसके साथ ही, लड़कियों के शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए जागरूकता अभियानों को बढ़ावा देना आवश्यक है। शिक्षा के साथ–साथ उन्हें रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए विशेष योजनाएँ बनानी चाहिए।

सरकार ने कई योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा दिया है, जैसे "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ", "कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय" और अन्य योजनाएं, लेकिन इन्हें और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, समाज को भी अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाना होगा, ताकि महिलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता दी जा सके।

उद्देश्य और लक्ष्य

- शिक्षा के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन।
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिला सहभागिता की तुलना करना।
- शिक्षा और महिला सहभागिता के बीच के संबंधों को समझना।

साहित्य समीक्षा

अनेक शोध पत्र और सरकारी रिपोर्टें यह बताती हैं कि शिक्षा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने और समाज में अपनी पहचान बनाने का अवसर देती है। शिक्षा ने कई विकासशील देशों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा दिया है। भारतीय समाज में भी शिक्षा का महत्व इसी दृष्टिकोण से देखा जाता है।

शोध पद्धतियाँ

यह शोध एक तुलनात्मक अध्ययन के रूप में किया गया है, जिसमें ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिलाओं के शिक्षा स्तर, रोजगार दर, और सामाजिक भागीदारी के आंकड़ों का संग्रह किया गया। सर्वेक्षण और साक्षात्कार तकनीकों का उपयोग कर डेटा संग्रहित किया गया है।

परिणाम और व्याख्या

शोध के परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि शहरी क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त महिलाओं की सहभागिता ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की अपेक्षा अधिक है। इसका मुख्य कारण शहरी इलाकों में बेहतर शिक्षा और रोजगार के अवसरों की उपलब्धता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा का विस्तार होने पर महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार देखा गया है।

निष्कर्ष

इस शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि महिलाओं की सहभागिता में शिक्षा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा के प्रसार से महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जा सकता है, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में भी उनकी उपस्थिति को बढ़ावा दिया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा को और अधिक प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

भारतीय समाज में महिला सहभागिता में शिक्षा का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा ने महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से सक्षम बनाया है, बल्कि उन्हें सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में भी सशक्त बनाया है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच अभी भी एक बड़ा अंतर है, जिसे दूर करने के लिए शिक्षा के प्रसार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। महिलाओं की शिक्षा में सुधार से न केवल उनका सशक्तिकरण होगा, बल्कि समाज का समग्र विकास भी संभव होगा। यह आवश्यक है कि समाज और सरकार दोनों मिलकर महिलाओं की शिक्षा और सहभागिता को बढ़ावा दें, ताकि वे भविष्य में देश की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका में समय के साथ महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले हैं। परंपरागत रूप से महिलाएं परिवार और समाज के सीमित दायरे में बंधी रहती थीं, जहां उनके अधिकार और अवसर सीमित थे। शिक्षा के प्रसार ने इस स्थिति को बदला है और महिलाओं को सशक्त बनाने का एक प्रमुख साधन साबित हुआ है। शिक्षा ने न केवल महिलाओं की व्यक्तिगत समझ और क्षमता को बढ़ाया है, बल्कि उन्हें सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से स्वतंत्रता भी दिलाई है। इस प्रक्रिया ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार लाने और उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने में सक्षम बनाया है।

समाज में शिक्षा का महत्व महिलाओं के लिए बहुत पहले से समझा गया है, लेकिन इसका व्यावहारिक रूप में प्रसार धीरे–धीरे हुआ। पहले जहां महिलाएं परिवार की सीमाओं में सीमित थीं, वहीं अब वे समाज के हर क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में उनकी भागीदारी तेजी से बढ़ी है। शिक्षा ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाया है, जिससे वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति अधिक जागरूक हुई हैं। इसके परिणामस्वरूप महिलाएं अब न केवल घर की देखभाल करती हैं, बल्कि कार्यस्थल, व्यापार और सरकारी संस्थानों में भी नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं।

आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति पर ध्यान दिया जाए, तो शिक्षा ने उन्हें रोजगार के अधिक अवसर प्रदान किए हैं। पहले जहां महिलाएं केवल घरेलू कार्यों में सीमित थीं, वहीं आज वे शिक्षिका, चिकित्सक, इंजीनियर, वकील, वैज्ञानिक और उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बना रही हैं। शिक्षा ने उन्हें केवल नौकरी पाने का साधन नहीं दिया, बल्कि आत्मनिर्भरता की भावना भी विकसित की है। इससे न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, बल्कि समाज में महिलाओं के प्रति दृ ष्टिकोण भी बदला है। महिलाओं के रोजगार में वृद्धि ने उन्हें घर की चारदीवारी से बाहर निकलने और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपने योगदान को साबित करने का अवसर दिया है।

संदर्भ

1. एस., तनवार (1987), रिलेशनशिप ऑफ सेक्सरॉल ओरियेन्टेशन, सेल्फ इस्टीम एण्ड सोशियों इकोनॉमिक बैकग्राउण्ड टू कैरियर एण्ड फैमिली वैल्यूज अमंग कालेज फीमेल्स, अप्रकाशित, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध मनोविज्ञान विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, पृ0 139 उद्धृत रश्मि श्रीवास्तव, (2000) लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
2. झा., के एन. (1985), वोमेन टुवर्ड्स मार्डनाईजेशन, पटना, जानकी प्रकाशन, 1985, पृ0 11 उद्धृत रश्मि श्रीवास्तव, (2000) लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच. डी. शोध प्रबन्ध शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
3. बाजपेयी, एल.बी. (2003), शिक्षा में नवाचार एवं तकनीकि, आलोक प्रकाशन।
4. बाजपेयी, एल.बी., सारस्वत, मालती (1996), भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामाजिक समस्यायें, आलोक प्रकाशन।
5. बेस्ट, जे.डब्ल्यू. (2001), 'रिसर्च इन एजूकेशन, प्रिन्टस हॉल ऑफ इन्डिया प्रा.लि. नई दिल्ली।
6. कश्यप, शिल्पा (2006), स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित एम0 एड0 शोधप्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।
7. कपिल, एच.के.(1999), अनुसंधान विधियॉ, एच0पी0 भार्गव बुक हाऊस, आगरा।
8. कौल, लौकेश (1997), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली ।
9. कुमार, मयंक (2008), सर्व शिक्षा अभियान में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों की भूमिका एवं परिषदीय विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि से एक तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
10. कुमारी, सोनिका (2011), महिला उत्पीड़न सम्बन्धी समाचारों के प्रति समाज के विभिन्न वर्गो के दृष्टिकोण का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
11. कुमारी, नीलम (2006), मध्यमवर्गीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति, जानकी प्रकाशन, पटना, उद्धृत सरिता कनौजिया (2011), कार्यरत महिलाओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरुकता तथा उसके कियान्वयन में सम्बन्ध. एक अध्ययन, अप्रकाशित एम0एड0 शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
12. कनौजिया, सरिता (2011), कार्यरत महिलाओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरुकता तथा उसके कियान्वयन में सम्बन्ध. एक अध्ययन, अप्रकाशित एम0एड0 शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
13. मोहपात्र, पी.एल. (1991), ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ व्यूज ऑफ एडल्ट लिट्रेट एण्ड इलिट्रेट वोमेन टुवर्डस अर्ली मेरिज एण्ड फैमिली साइज, उद्धृत एम.बी.बुच, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वॉल्यूम–11, दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., पृ. 1186, द्वारा रश्मि श्रीवास्तव, (2000) लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच.डी.शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

14. मनथोटो, (1996), 'इम्पावरिंग वोमेन फॉर डेवलपमेंट थ्रू नॉन फीमेल एजूकेशन, द केस आफ लेस्थो, डिजरर्टेशन एब्सट्रेक्ट इण्टरनेशनल (ए) ह्यूमेनिटीज एण्ड सोशल साइन्स –वाल्यूम 57, नं. 3 पृ0 975 द्वारा अय्यूब अली सिद्दीकी (2003), लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं में महिला अधिकारों के प्रति जागरुकता के स्तर का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
15. मिश्रा, के. एन. (1995), वोमेन एजुकेशन एण्ड द उपनिषदक सिस्टम ऑफ एजुकेशन, चुग पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
16. मिश्रा, शिवा (1995), विभिन्न शैक्षिक स्तर की शिक्षिकाओं का स्त्री सम्बन्धी समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन, अप्रकाशित एम.ए., शोध प्रबन्ध द्वारा सोनिका कुमारी (2011), महिला उत्पीड़न सम्बन्धी समाचारों के प्रति समाज के विभिन्न वर्गो के दृष्टिकोण का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
17. मिश्रा, डॉ0 आर0 एम0 (1996), शिक्षामनोविज्ञान में प्रयोग, परीक्षण, सांख्यिकी मापन, एवं मूल्यांकन, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।
18. प्रियंका, (2008), माध्यमिक स्तर पर छात्राओं की समस्याएं व उनका निराकरण–एक अध्ययन, अप्रकाशित एम.ए. शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
19. सिंह, रजनी रंजन (2007), सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में महिला सशक्तिकरण की वास्तविकतायें, परिप्रेक्ष्य ।
20. सिंह, डॉ0 मधुरिमा (2012), शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं की जनसंख्या विस्फोट के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षाचिन्तन, वर्ष 11, अंक 42, त्रिमूर्ति संस्थान, अप्रैल. जून।
21. सिंह, अरुण कुमार (2006), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास।
22. सिद्दीकी, अय्यूब अली (2003), लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं में महिला अधिकारों के प्रति जागरुकता के स्तर का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
23. तिवारी, डी सुपरवाइजर (1980), एट्टीट्यूड ऑफ द विलेजर्स टुवर्ड वूमेन, एजुकेशनः अप्रकाशित एम. एड. डिजर्टेशन, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ द्वारा अय्यूब अली सिद्दीकी (2003), लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं में महिला अधिकारों के प्रति जागरुकता के स्तर का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
24. गिलेस, जूडी (1993), ए होम ऑफ वन्स आन वोमेन एण्ड डोमेस्टि सिटी इन इंग्लैण्ड 19–18–1950, सोशियोलॉजिकल एब्स्ट्रेक्ट, सैन डियागो इण्टरनेशनल सोशियोलॉजिकल एसोसियेशन, 41, 5 दिसम्बर, 1993 पृ0 2688, उद्धृत रश्मि श्रीवास्तव, (2000) लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
25. गिलेस्पी डियर्स, कीसीए स्पोहन (1990), एडोलसेन्टस एट्टीट्यूड टुवर्ड्स वोमेन इन पॉलिटिकलः ए फालोअप स्टडी, सोशियोलॉजिकल एब्सट्रेक्ट, सैनडियागो इण्टरनेशनल सोशियोलौंजिकल ऐसोसियेशन, 38, 4 अक्टूबर 1990, पृ0 148, उद्धृत रश्मि श्रीवास्तव, (2000) लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
26. हेनरी, ई. गैरेट (2007), शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकीय, कल्याणी पब्लिशर्स।
27. भरत, शालिनी (1994), परसेप्शन ऑफ इण्डियन वोमेनः ए कम्प्रेजन ऑफ कैरियर एण्ड नान कैरियर वोमेन, साइक्लॉजिकल एब्सटेक्ट, वाशिंग्टन, द अमेरिकन साइक्लॉजिकल एसोसियेशन, 81,11 नबम्बर 1994 पृष्ठ 49–49।
28. भट्ट, जी.डी. (2000) 'इम्पैक्ट ऑफ इन्सेटिव स्कीमस ऑफ एलीमेन्ट्री एजूकेशन' हिमालयन रीजन स्टडी एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट (एरिक फन्डेड) इन्डियन एजूकेशनल एब्स्ट्रेक्टस, वाल्यूम नं0–2, जुलाई, एन.सी.ई.आर.टी द्वारा कल्पना वर्मा (2011), विभिन्न स्तरों तक शिक्षित महिला प्रधानों की राजनैतिक भागीदारी की प्रकृति, अप्रकाशित पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ।
29. पाण्डेय, रामशकल (2005), शिक्षा की दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ.सं. 225।
30. पाठक, इन्दू (2007), राजनैतिक सहभागिता एवं महिला सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र, अंक 5, अगस्त 2007, पृ0 26–30 ।
31. पाठक, पी.डी. (2007), भारतीय शिक्षा और उनकी समस्यायें, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा, पृ.सं.– 460–462।
32. प्रतापमल, देवपुरा (2008), 'महिला सशक्तिकरण में शिक्षा का महत्व', कुरूक्षेत्र, अंक–5, मार्च।
33. श्रीवास्तव, रश्मि (2000), लखनऊ शहर की किशोरियों के वृत्तिक अभिविन्यास तथा आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.